स्त्री विमर्श में
नयापन

डॉ. गौरव त्रिपाठी
डॉ. कामिनी वर्मा

Scanned with CamScanner

स्त्री विमर्श में नयापन

डॉ. गौरव त्रिपाठी, डॉ. कामिनी वर्मा

AKHAND

अखण्ड पब्लिशिंग हाउस
दिल्ली (भारत)

Scanned with CamScanner

विषय सूची

	समर्पण	*v*
	भूमिका	*vii*
	सम्पादकीय	*xiii*
	योगदान सूची	*xvii*
1.	कांटे की बात : स्त्री के बहाने *—डॉ. लल्लन यादव*	1
2.	बौद्धकाल में स्त्रियों के शैक्षिक अधिकार *—अनिल कुमार यादव*	7
3.	हिन्दी में स्त्री आत्मकथा लेखनः दशा और दिशा *—आरज़ू सिंह*	13
4.	स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वातंत्र्योत्तर काल में महिला आन्दोलन : एक विश्लेषण *—रश्मि गुप्ता*	21
5.	कार्यशील महिलाएं : ये राह नहीं आसान *—डॉ. विभा*	34
6.	स्त्री–विमर्श का इतिहास *—संदीप, आदित्य*	40
7.	देह की राजनीति देश की राजनीति तक : एक संघर्ष *—शज़िया बशीर*	63

Scanned with CamScanner

8. भारत में महिलाओं की बदलती सूरत
–डॉ. ज्योति मिश्रा

9. हिन्दी साहित्य में स्त्री अस्तित्व और
अस्मिता के स्वर
–डॉ. सुनीता यादव

10. पितृसत्तात्मक वैचारिकी, स्त्री एवं
भारतीय समाज
–डॉ. मिथिलेश कुमार सिंह, डॉ. दिनेश कुमार राजपूत

11. महिला प्रस्थिति : एक समकालीन विमर्श
–डॉ. धीरेन्द्र सिंह, डॉ. दिनेश कुमार राजपूत

12. लिंगीय भेदभाव की बेड़ियों में बंधी महिलायें
–डॉ. मोनिका सरोज

13. भारत में नारी शिक्षा के विकास हेतु प्रयास
–राखी भारती

14. नारी तू नारायणी
–डॉ. विदुषी शर्मा

15. महिलायों के जीवन मे औषधीय पौधों की भूमिका
–सौम्या मिश्रा, श्रुति मिश्रा, डॉ. सिद्धार्थ तिवारी

16. समकालीन स्त्री–लेखन और चुनौतियाँ
–डॉ. शशिकला जायसवाल

17. स्त्री सशक्तिकरण : मुद्दे एवं चुनौतियाँ
– डॉ. जयदेव

18. स्त्री विमर्श : एक विहंगम दृष्टिपात
–डॉ. चेतना उपाध्याय

19. भारतीय समाज में नारी शक्ति की भूमिका
–डॉ. धीरज कुमार गुप्ता

20. महिला सशक्तिकरण
–डॉ. सुनीता मिश्रा

Scanned with CamScanner

16

समकालीन स्त्री–लेखन और चुनौतियाँ

"दुविधाएँ एवं द्वन्द्व हैं।
कितने कटघरे हैं
है कितनी अदालतें
फिर भी अन्याय से घिरी है हम!
कितने हैं ईश्वर–अल्लाह। हैं मूसा और गुरू,
फिर भी कितना है अधर्म!
देश में है, पूरी आजादी। फिर भी
कितने खूँटों से
बँधी है हम!"।

जेबा रशीद की लेखनी से निकली ये रचना, वर्तमान समाज में, स्त्री की अन्तश्चेतना की पुकार को रेखांकित करने के साथ ही व्यंग्य की पैनी धार लिये पूरी व्यवस्था पर प्रहार करती मालूम होती हैं। इसी के साथ ही मै यहाँ एक और उद्धरण देना चाहूँगी, जो कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द्र के साहित्य सम्बन्धी दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है– " वही साहित्य खरा है, जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की भाषा हो, जीवन की ऊँचाइयों का प्रकाश हो, जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी उत्पन्न करे, सुलाये नहीं।"[2] निश्चय ही साहित्य वह क्षेत्र है, जो हमे केवल सामाजिक गुण–दोषों का परिचय ही नहीं कराता, बल्कि सामाजिक यथार्थ के कलेवर को बदलने के लिए प्रेरित भी करता हैं। इस पर भी जब हम बात करते है स्त्री–लेखन की, तो कई तरह के प्रश्नों से हमारी मुठभेड़ होती है, और जिनका सामना किए बगैर आगे नहीं बढ़ा जा सकता। आदिकाल से लेकर वर्तमान समय तक स्त्री चिंता और चिंतन का विषय बनी रही है, फिर भी

Scanned with CamScanner

शिक्षा, सत्ता और संपत्ति से स्त्रियों को सदियों से वंचित रखा गया। यह अचानक ही नहीं वरन एक सोची समझी सांगती आग्रह के कारण था। आज भारतीय स्त्री के पास जो मुक्तिकामी चेतना है, वह बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की देन है। स्त्री स्वातंत्र्य की इस चेतना ने हमारा जीवन परिवर्तित कर दिया: आज जिस जमीन पर हम खड़े हैं उसे तैयार करने में हमारी पूर्ववर्ती महिला आन्दोलनकारियों, समाजसेवियों और चिंतको ने बहुत श्रम किया है।

हिन्दी साहित्य के विभिन्न कथा आन्दोलनों के आरम्भ के साथ स्त्री लेखन के क्षेत्र में भी विविधताओं का आगमन हुआ। "हमारी जिस खामोशी ने हमे, कैद कर रखा था, वह अब तार्किकता और प्रश्नाकुलता की ओर बढ़ रही है, सम्पूर्ण साहित्य में, नारी लेखन सहजता, गम्भीरता और बिना किसी अवरोध के स्वयं को अभिव्यक्त कर रहा है, निश्चय ही यह बदलाव क्रान्तिकारी बदलाव है।"[4] यहाँ मै, स्त्री लेखन के क्षेत्र में अपनी उपस्थिति से धमक पैदा करती कुछ स्त्री रचनाकारों और उनकी कुछ विशिष्ट कृतियों का उल्लेख करूँगी जो, स्त्री लेखन के क्षेत्र में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य के लिए केवल स्त्री ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण मानवता की आवाज बनकर निकलती है। स्वतन्त्रता के पश्चात नारी अस्मिता के तेजी से उभरते स्वरों के बीच, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोवती, सूर्यवाला, निरूपमा सेवती, नासिरा शर्मा, मृणाल पाण्डेय, नीलिमा सिंह, आशापूर्णा देवी आदि का रचना संसार वृहद और व्यापक है। मृदुला की कृति 'कठगुलाब' की स्मिता और अमिता के बीच वार्तालाप नारी के बदलते तेवर को अभिव्यक्त करते है–" मुझे यह पुरातन और तनुमा छल प्रपंच पसन्द नहीं। दो टूक बात कहने का साहस हो तो मुझसे दोस्ती करना वरना अपना रास्ता माप।"[5] यहाँ लेखिका स्पष्ट रूप से अपनी स्त्री शरीर की संपत्ति पर अपना एकाधिकार रखना चाहती है। नासिरा शर्मा की 'शाल्मली' एक स्थान पर कहती है–" मैं पुरूष विरोधी न होकर अत्याचार विरोधी हूँ। मेरी नजर में नारी मुक्ति और स्वतन्त्रता समाज की सोच, स्त्री की स्थिति को बदलने में हैं।"[6] यहाँ संघर्षशील नारी, बदली हुयी परिस्थितियों में पुराने पड़ चुके मूल्यों की पड़ताल करती हैं। इन स्त्री रचनाकारों की रचनाओं में पारम्परिक ढांचा टूटता नजर आता हैं। समकालीन आधुनिक परिवेश में मध्यवर्ग के विस्तार के साथ ही नौकरीपेशा, स्वावलम्बी, औरतों का समूह उभरा साथ ही तमाम समस्यायें भी सुरसा की तरह मुँह बाये

Scanned with CamScanner

लगी। परम्परागत पारिवारिक ढाँचे, पुरूषवादी, सांमती सोच और कार्यालयी संस्कृति को उजागर करती, ममता कालिया की कहानी "जाँच अभी जारी है" नमिता सिंह की दर्द उल्लेखनीय, रचना हैं। ये कहानियाँ सत्ता–व्यवस्था और भ्रष्टाचार की पर्तें उघाड़ने के साथ कामकाजी स्त्री के दोहरे व्यक्तित्व से जुड़ी समस्याओं को भी, उजागर करती हैं। समकालीन समाज में जब स्त्रियां उच्च–पदस्थ है बावजूद इसके उनकों स्वतन्त्र अस्तित्व के साथ सहजतापूर्वक स्वीकार नहीं किया जाता। वस्तुतः मानसिक बदलाव की इस लडाई को सबको मिलकर लड़ना हैं, तभी सामाजिक बदलाव सम्भव है।

समकालीन महिला लेखन नारी की अस्मिता व स्वतन्त्र अस्त्वि की खोज का लेखन है। आधुनिक लेखिकाओं ने अपनी रचनाधर्मिता द्वारा, स्त्री की अस्मिता को एक विशिष्ट पहचान दी है। उन्होंने साहित्य में सदियों की चुप्पी को तोड़ा है। नारी पुरानी रूढ़ियों, रीति रिवाजो को मानने के लिए विवश नहीं है। प्रभा खेतान का उपन्यास 'छिन्नमस्ता' इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। चित्रा मुद्गल का आवां स्त्री चेतना को अभिव्यक्ति देता समय से मुठभेड़ की पडताल है। मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'फैसला' स्त्री के उस तेवर और पहचान को रेखांकित करता है जो पुरूष के आतंक तले कभी अभिव्यक्ति नहीं पा सका लेकिन अब यहाँ भी आंतक की छाया से मुक्ति पाने की कामना और साहस एक ग्रामीण स्त्री में भी पल्लवित होती दिखाई पड़ती है। वैश्वीकरण के इस दौर में स्त्री की छवि कितनी बदली और कितनी किलेबंदी की जद से मुक्त हुयी, इसकी पड़ताल संवेदना के धरातल पर की जानी जरूरी हैं। "पति–पत्नी के बीच, स्त्री–पुरूष के बीच, परिवार और समाज के बीच नए समीकरणों का साहित्य रचकर, वह स्वयं कहां खडी हैं ? ऋता शुक्ला के अनुसार – " आज का महिला लेखन किसी विशिष्ट चौखट में बँध जाने की विवशता से नहीं, पूरी विश्वसनीयता के साथ जिन्दगी की एक–एक परत को उधेडकर भीतर तक प्रवेश कर जाने की उत्सुकता से पूर्ण है। आज स्त्री को हर स्तर पर लड़ना है, लेखन संघर्ष उसी का परिणाम है।"[7] वैश्विकरण के इस दौर ने उपभोक्तावादी संस्कृति को चरम पर पहुँचा दिया है। आधुनिक समाज में मानवीय मूल्य और संवेदना हाशिये पर पहुँच गयी हैं। लगातार स्वार्थ केन्द्रित होता मनुष्य दिशाहीन हो रहा है। उपभोक्तावादी संस्कृति की विकृतियों और विद्रूपताओं को व्यक्त करती रचनाओं में महुआ माझी, की 'ड्राफ्ट' 'रोल मॉडल' नीलमशंकर की 'प्रतिरोध' प्रमुख है। ये रचनाएँ समाज

Scanned with CamScanner

को एक नई दिशा देने की दृष्टि से पहचानी जाती हैं।

समकालीन स्त्री लेखन तमाम चुनौतियों को आत्मसात करता, प्रतिरोध करता, संघर्ष करता गतिशील हैं। स्त्री लेखन की एक बड़ी समस्या के रूप में दैहिक संबंधों की उन्मुक्तता के प्रश्न के रूप में सामने आता है। यह उन्मुक्तता, विवाह जैसा संस्था पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करती है। स्त्रियों ने स्वयं मान लिया कि हां हम देह हैं, पर इसका मालिक पुरूष नहीं वरन् वह स्वयं हैं। यहाँ परिस्थितियाँ बदली जरूर, पर बात अब भी वही है। सामंतवादी व्यवस्था की देन देह या इज्जत का प्रश्न, सौदा और उपयोग, ये सब, रूप बदलकर सामने आती हैं और स्त्री को भटकाती हैं। बाजारवाद के इस दौर में सौन्दर्य प्रतियोगिता, और विज्ञापन के माध्यम से स्त्री कमोडिटी बन रही हैं। विवाह दाम्पत्य परिवार मातृत्व सब पर प्रश्न चिन्ह लगता जा रहा है। स्त्री विरोधी समाज में कन्याभ्रूण हत्या पर लिखी गयी दीपक शर्मा की कहानी 'चमड़े की गंध' पुरूष मानसिकता पर प्रकाश डालती हैं। इन सबके बीच, स्त्री लेखन को विस्तृत भाव–भूमि देती स्त्री रचनाकार कही भ्रम का शिकार न हो जाय, इसका खटका भी लगा रहता हैं। लेखन को विस्तीर्ण फलक प्रदान कर, उसे आतिवादी होने से बचाना भी रचनाधार्मिता की आवश्यक शर्त हैं।

हिन्दी साहित्य में नारी लेखन को लेकर दो अलग–अलग विचारधारा दिखाई पड़ती है। आलोचकों का एक वर्ग महिला लेखन से पूर्णतः असन्तुष्ट है तो दूसरा वर्ग नारी लेखन के भविष्य, दशा और दिशा को लेकर आस्थावान भी। आज भी बहुत से आलोचक "महिला–लेखन को स्त्रैण कहकर उसे महत्वहीन करार देते है। नामवर सिंह के अनुसार– महिला–लेखन में सम्पूर्ण समाज की अभिव्यक्ति नहीं होती। दरसल ऐसा लेखन छोटे समुदायों के हितों को ध्यान में रखकर किया जाता है। ....यह लेखन तात्कालिक प्रक्रिया का परिणाम है, जबकि साहित्य का मूलस्वरूप मानव–मुक्ति प्रदान करने वाला है, खण्ड–खण्ड में, मुक्ति साहित्य का लक्ष्य नहीं।"[9] बेशक खण्ड–खण्ड में मुक्ति साहित्य का लक्ष्य नहीं होता क्योंकि साहित्य का मूल–लक्ष्य मानव–मुक्ति है। लेकिन इस प्रकार की दैवीय स्थापनाओं के बाद भी क्या हम एक भी ऐसी कृति का नाम ले सकते हैं जहाँ प्रत्येक वर्ग, चाहे वह स्त्री हो या दलित, या पूँजीवादी व्यवस्था की भेंट चढ़ता आम आदमी और मजदूर वर्ग, इन सभी की कराह, उनकी त्रासदी, और पीड़ा को

Scanned with CamScanner

अभिव्यक्ति देता, और न्याय करता दिखाई पड़ता हो। समकालीन स्त्री–लेखन ने अत्यन्त तीखे, ज्वलन्त प्रश्नों, अन्तर्विरोधों और विरोधाभासों को अपने लेखन में उतारा है। इनका लेखन आक्रामक, तीक्ष्ण और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के पुरजोर विरोध से आप्लावित है। सांमती सोच की शिकार पितृसत्तात्मक व्यवस्था स्त्री और पुरूष दोनों के लिए अलग–अलग मानदण्डों का निर्माण करती है और स्त्री के लिए अनेकानेक वर्जनाओं की दीवार खड़ी करती है। समकालीन महिला–लेखन वर्जनाओं के पार जाकर साहित्य के विस्तीर्ण फलक पर अपने हस्ताक्षर को आतुर है। साहित्य के विभिन्न विधाओं में आज अनेक स्त्री–रचनाकार सशक्त लेखन कर रही है, जिनमें, सुधा, गोयल, मणिका मोहिनी, आशारानी वोहरा, गीतांजली श्री, तेजी ग्रोवर, रमणिका गुप्ता आदि अनेक नाम है जो लेखन–जगत में, अपनी पहचान कायम कर चुकी है।

अन्ततः हम कह सकते है कि एक ओर महिला–लेखन में वैश्वीकरण के प्रभाव से बदलते सामाजिक मूल्यों और उसके विघटन को रेखाकिंत किया है तो दूसरी ओर स्त्री के सशक्त होते स्वरुप को भी उद्घाटित किया है। स्त्री लेखन में स्वंय को साहित्य में स्थापित करने की बेचैनी है, तो समाज के दोहरे मानदण्डों के खिलाफ लड़ने का धैर्य भी। इस तरह स्त्री–लेखन बिना किसी वाद के खांचे में बँधे, अबाध गति से, समय के तेवर की चुनौतियों को स्वीकारते हुए, भविष्य की ओर अग्रसर है। सांस्कृति मूल्य–क्षरण और विघटन से प्रभावित मानव–गूल्यों को बचाये रखने और संजोने–संवारने की जिम्मेदारी भी, स्त्री लेखन के लिए एक चुनौती है जिसे वह बखूबी समझती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. रशीद, डॉ0 जेवां; की कविताएं www. Pravasiduniya.com।
2. पाण्डेय, सं. डॉ0 लक्ष्मीकांत; प्रेमचंद साहित्य–संदर्भः ग्रन्थम्, रामबाग कानपुर, पृ.–330।

   ठाकुर, गुलसारिका; आलेखः साहित्य में स्त्री का योगदानः https/ M.facebook.com।
3. वर्मा, महादेवी; श्रृंखला की कडियांः राधाकृष्ण प्रकाशनः 2013।
4. गर्ग, मृदुला; कठगुलाब, ज्ञानपीठ प्रकाशन दिल्ली, 2009।

Scanned with CamScanner

5. शर्मा, नासिरा, शाल्मली, किताबघर प्रकाशन, 1994।
6. ठाकुर, गुलशारिका, आलेख, साहित्य में स्त्री का योगदान, https/ M.fecebook.com।
7. वाङमय पत्रिका : ब्लागस्पॉट डाट कॉम।
9. त्रिपाठी, प्रो0 मधुसूदन; भारत में मानवाधिकार, ओमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008।
10. बसु, दुर्गा दास; भारत का संविधान, वाधवा एण्ड कम्पनी लॉ पब्लिशर्स, आगरा, 2005।
11. राष्ट्रीय अपराध लेखा ब्यूरो 2013।

- http://nhrd.nic.in.
- http://hindi.webdunia.com.

Scanned with CamScanner